अपने लेखन से नारी-चेतना को जाग्रत करती बंगमहिला

हिंदी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग की लेखिका 'बंगमहिला' का नाम 'दुलाईवाली' कहानी की रचनाकार के रूप में बड़े सम्मान से लिया जाता है। 'बंगमहिला' राजेंद्रबाला घोष का लेखकीय नाम था। बंगलाभाषी होने के बावजूद बंगमहिला ने हिंदी में लिखना चुना और उनके लेखन को हिंदी जगत में पर्याप्त प्रतिष्ठा मिली। बंगमहिला बीसवीं सदी के आरंभिक दशकों की महत्त्वपूर्ण लेखिका थीं। हाल ही में इन पर आई पुस्तक– 'बंगमहिला' से प्रस्तुत है एक संपादित अंश...

पुस्तक अंश

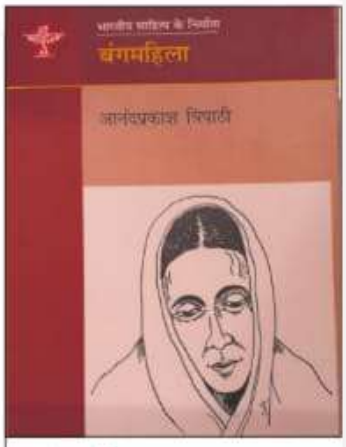

बंगमहिला
(विनिबंध)
लेखक : आनंदप्रकाश त्रिपाठी
प्रकाशक : साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
मूल्य : 100 रुपये

भारतीय स्वाधीनता संग्राम सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि कई मोर्चों पर लड़ा गया था। इसमें स्त्री, दलित, किसान, आदिवासी आदि की मुक्ति के लिए आजादी के नेतृत्वकर्ताओं, समाजसुधारकों, साहित्यकारों ने अपूर्व योगदान किया था। पराधीन भारत में स्त्री के जीवन की पारंपरिक और रूढ़िवादी मान्यताओं की जकड़नें अभी खुली नहीं थीं। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था ने उसकी गुलामी के लिए अपने सारे हथियार पैने कर रखे थे। फिर पश्चिमी सभ्यता और शिक्षा के प्रभाव से भारत के पंजाब, गुजरात, बंगाल और महाराष्ट्र में स्त्री-चेतना का उदय हुआ, जो पीछे प्रसारित होकर उत्तर भारत के हिंदी क्षेत्र में व्याप्त हुई।

बंगमहिला इसी स्त्री-चेतना की उपज थीं, जिन्होंने स्त्री-जीवन के विविध प्रसंगों पर उत्सुक, बेचैन और आशान्वित भाव से सार्थक विमर्श किया। गृहस्थ मुद्दों पर बंगमहिला ने आदर्श एवं यथार्थ का सन्निपात कर युगीन स्त्री-चिंतन को गतिशीलता प्रदान की। वे अपने जीवन के स्तर पर भी सतत संघर्षशील बनी रहीं और उन्होंने साहित्य के माध्यम से महिलाओं के लिए जागरण का संदेश भी दिया।

बंगमहिला की रचनाओं से स्पष्ट है कि वे बुनियादी तौर पर स्त्री संबंधी परंपरागत दृष्टिकोण की समर्थक हैं। 'गृह' शीर्षक निबंध में उन्होंने स्त्री के महत्त्व को स्वीकार करते हुए उसे गृहिणी रूप में गृह का प्राण, संसार में गृह की सृष्टिकर्ता तथा गृहस्थाश्रम की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी बताया है, जिसके बिना गृह की संकल्पना ही संभव नहीं– 'गृहिणी के अभाव से उसका (मनुष्य) सर्ववस्तुसंपन्न गृह एक श्मशान तुल्य प्रतीत होता है। स्त्री ही घर के सर्वसुखों को देनेवाली देवी है।'

लेकिन बंगमहिला इस बात से आहत हैं कि पुरुष के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित करने के बावजूद स्त्री जाति को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। इस बात की उन्हें गहरी पीड़ा है कि स्त्रियों को मूर्ख कहकर अपमानित किया जाता है। ऐसी स्थिति में पुरुष वर्ग को चेताते हुए दो टूक अंदाज में वे कहती हैं– 'एक मूर्ख स्त्री की ही दया से वे आज मनुष्य समाज में मनुष्य कहलाने के योग्य हुए हैं। नारी में यदि और कुछ भी गुण व महत्त्व न हो तो भी वह केवल एक मातृधर्म के लिए सबके सम्मान की भाजन है।'

बंगमहिला देश की स्त्रियों की दुर्दशा के कारणों को समझने का भी प्रयास करती हैं। भारतीय स्त्रियां यूरोपीय देशों की सभ्य महिलाओं की बराबरी क्यों नहीं कर सकतीं? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ते हुए वे पर्दाप्रथा को प्रमुख कारण मानती हैं। पर्दाप्रथा के कारण हिंदुस्तानी स्त्रियां घर की चारदीवारी के भीतर अंधकारमय जीवन व्यतीत करने को अभिशप्त होती हैं। शिक्षा से वंचित तथा पति भक्ति एवं पति प्रीति में सदा नतमस्तक रहने के कारण उनमें स्वातंत्र्य चेतना का नामोनिशान तक नहीं रहता है– 'हिंदू वनिता पति के साथ विद्या, बुद्धि, वय इत्यादि किसी बात में भी बराबरी नहीं कर सकती। विवाह के उपरांत हिंदू बालिका जिस गुरुभाव से पति को देखती है, वह भाव चिरकाल तक उसके मन में बना रहता है।